नई हिन्दी भारती

आठवीं कक्षा के लिए

(तीसरी भाषा)

L5CBMQ

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

नई हिन्दी भारती

आठवीं कक्षा

तीसरी भाषा

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

प्रो.डॉ. राधाकान्त मिश्र
प्रो.डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. स्नेहलता दास
श्री गौरहरि पण्डा

पुनरीक्षण

प्रो.डॉ. राधाकान्त मिश्र
प्रो.डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. सुधांशु कुमार नायक
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. अजित प्रसाद महापात्र
श्री दिनमणी महान्ति

संयोजक

डॉ. सविता साहु

प्रथम संस्करण : २०१९

प्रकाशक:

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आमुख

ओड़िशा सरकार के आदेशानुसार आठवीं कक्षा को प्राथमिक शिक्षास्तर में शामिल करने के बाद उसकी पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण आदि की जिम्मेदारी शिक्षक शिक्षा निदेशालय को सौंपी गई। यह कार्य पहले माध्यमिक शिक्षा परिषद, कटक द्वारा किया जाता था। प्रारभ में उस संस्था के द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों को यथावश्यक पुनरीक्षण के बाद स्वीकार कर लिया गया है। विद्यार्थियों को शैक्षणिक कार्यक्रम में अधिक सक्रिय करने हेतु अनुप्रयोगात्मक अभ्यास आदि जोडा गया है। आशा है, इससे शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अधिक उपयोगी होगी ।

हम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, औड़िशा, कटक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और पुनरीक्षक-मंडल का धन्यवाद करते हैं।

निदेशक
शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, ओड़िशा,
भुवनेश्वर

हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दी

बात बहुत पुरानी है । इलाहाबाद का एक लड़का वर्धा गया । रास्ते में उसे एक कामगर महिला ने कुछ पूछा । लड़के ने कहा- मैं मराठी नहीं जानता । तुम हिन्दी नहीं जानती । मेरी बात क्या समझोगी ? महिला ने झल्लाकर कहा- ''आमचे देश में आया ओर बोलता हमकु इन्दी नहीं आता । आमकु बरुबर इन्दी आता, बोल ।'' दोनों में बातचीत हो गई । दोनों जान गए कि हिन्दी भारत में सभी जगह बोली और समझी जाती है।

आप भी जान लीजिए हिन्दुस्तान की भाषा है हिन्दी । वैसे यहाँ दूसरी भाषाएँ भी हैं । मराठी, बंगाली, ओड़िआ, गुजराती, पंजाबी, तमिल, तेलुगु आदि । मगर सब लोग थोड़ी-थोड़ी हिन्दी जानते हैं । क्योंकि हिन्दी सरल भाषा है । अपने प्रांत के बाहर आप पाँव रखेंगे तो हिन्दी बोलेंगे । उत्तर भारत के हर अंचल में हिन्दी मातृभाषा है । सब लोग जनसभाओं में हिन्दी बोलते हैं । क्योंकि लोग इसे समझते हैं । रेडियो, टीवी में हिन्दी के बहुत कार्यक्रम होते हैं । लोग उनसे भी हिन्दी सीखते हैं । हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है । दफ्तरों में इसका इस्तेमाल होने लगा है । हिन्दी हमारी राजभाषा है । हिन्दी हमारी अपनी भाषा है ।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा ।
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

सूचीपत्र

	विषय	कवि / लेखक	पृष्ठ
1.	सीखा था जी नहीं भुले		1
2.	पुष्प की अभिलाषा (कविता)	माखनलाल चतुर्वेदी	3
3.	हम क्या-क्या जानते हैं		7
4.	कुएँ के मेढ़क (ललित निबंध)	(संकलित)	10
5.	एक बूँद (कविता)	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	18
6.	घोड़े ने जान बचाई (जीवनी)	(संकलित)	22
7.	प्रकृति का संदेश (कविता)	सोहनलाल द्विवेदी	29
8.	भगवान के डाकिए (कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	32
9.	मैं चाँद से बोल रहा हूँ (पत्र)	(संकलित)	35
10.	ताजमहल की आत्मकहानी (आत्मकथा)	गुलाब राय	40
11.	अनुवाद		50
12.	आइए, हम कविता बनाएँ		53
13.	पहेलियाँ : बूझें बुझाएँ		54

○○○

शिक्षकों से

आरम्भिक पन्नों में पूर्वज्ञान पर आधारित कई सरस अभ्यास दिए गए हैं । ये वर्ण, मात्रा, संयुक्ताक्षर आदि पर हैं । क्योंकि हिन्दी शिक्षा की सही शुरुआत इस कक्षा से होती है । शुद्ध भाषा के लिए व्याकरण-ज्ञान आवश्यक है । इस पुस्तक में उसे भाषा-कार्य के अंतर्गत रखा गया है, जो सैद्धान्तिक नहीं, प्रयोगात्मक हैं । व्याकरण के निम्न मुद्दों पर शिक्षण और अनुशीलन कराएँ :

1. शब्द रूप, लिंग, वचन
2. संज्ञा-क्रिया का संबंध
3. शब्द-निर्माण का परिचय
4. सरल वाक्य-गठन
5. सरल पदबंध का परिचय, जिसमें विभक्ति, परसर्ग, संज्ञा और विशेषण के प्रयोग हों ।

इन सभी-विषयों का अनुशीलन कराएँ । जरूरत पड़ने पर बोर्ड़ द्वारा प्रकाशित व्याकरण पुस्तक की मदद भी लें ।

कविताएँ, कहानियाँ पाठ को सरस बनाती हैं । उनका अध्यापन सरस ढंग से कराएँ। शब्दार्थ के भीतर पैठने की क्षमता बढ़ाएँ। साहित्य भाषा का आकर्षण बन जाए । कविताओं को गाएँ और गवाएँ । बच्चे-बच्चियाँ भी हिन्दी के गीत जानते हैं । उन्हें गाने के लिए उत्साहित करें । हिन्दी में बातचीत करें । भाषा की तरफ उन्हें आकृष्ट करें ।

लेखक-संपादक-मंडल

सीखा था जो नहीं भूले

L5L7PD

1. आओ शब्द बनाएँ :

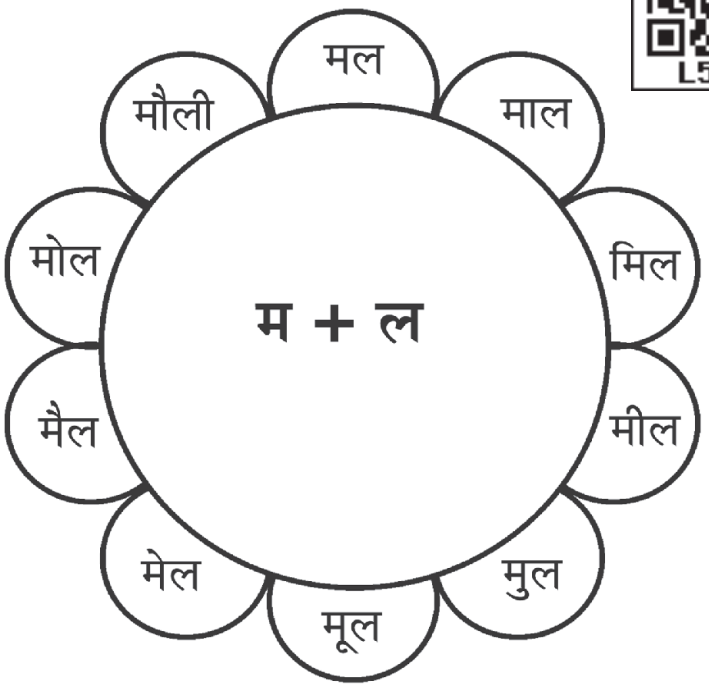

- ऊपर के खाकों में बने शब्दों को क्रम से लिखिए :

  जैसे - मल, माल .....

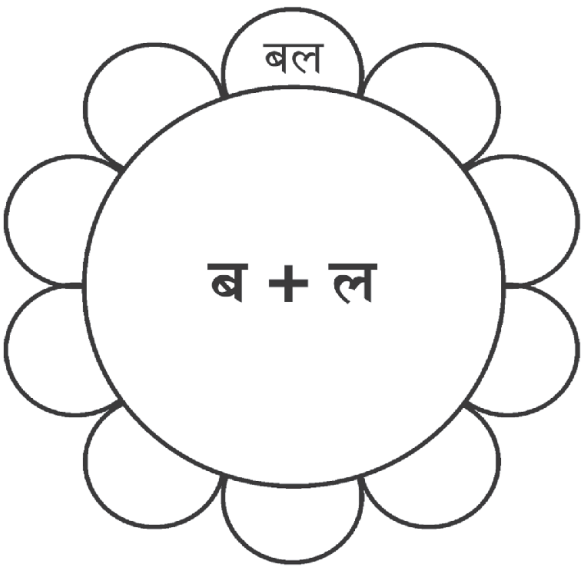

- ऐसे शब्द सोचिए और लिखिए :

2. आप इन व्यंजन वर्णों को जानते हैं :

क वर्ग - _____ _____ _____ _____ _____

च वर्ग - _____ _____ _____ _____ _____

ट वर्ग - _____ _____ _____ _____ _____

त वर्ग - _____ _____ _____ _____ _____

प वर्ग - _____ _____ _____ _____ _____

य _____ _____ व

श _____ _____ ह

क्ष त्र ज्ञ श्र

गिनती :

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९

पुष्प की अभिलाषा

माखनलाल चतुर्वेदी

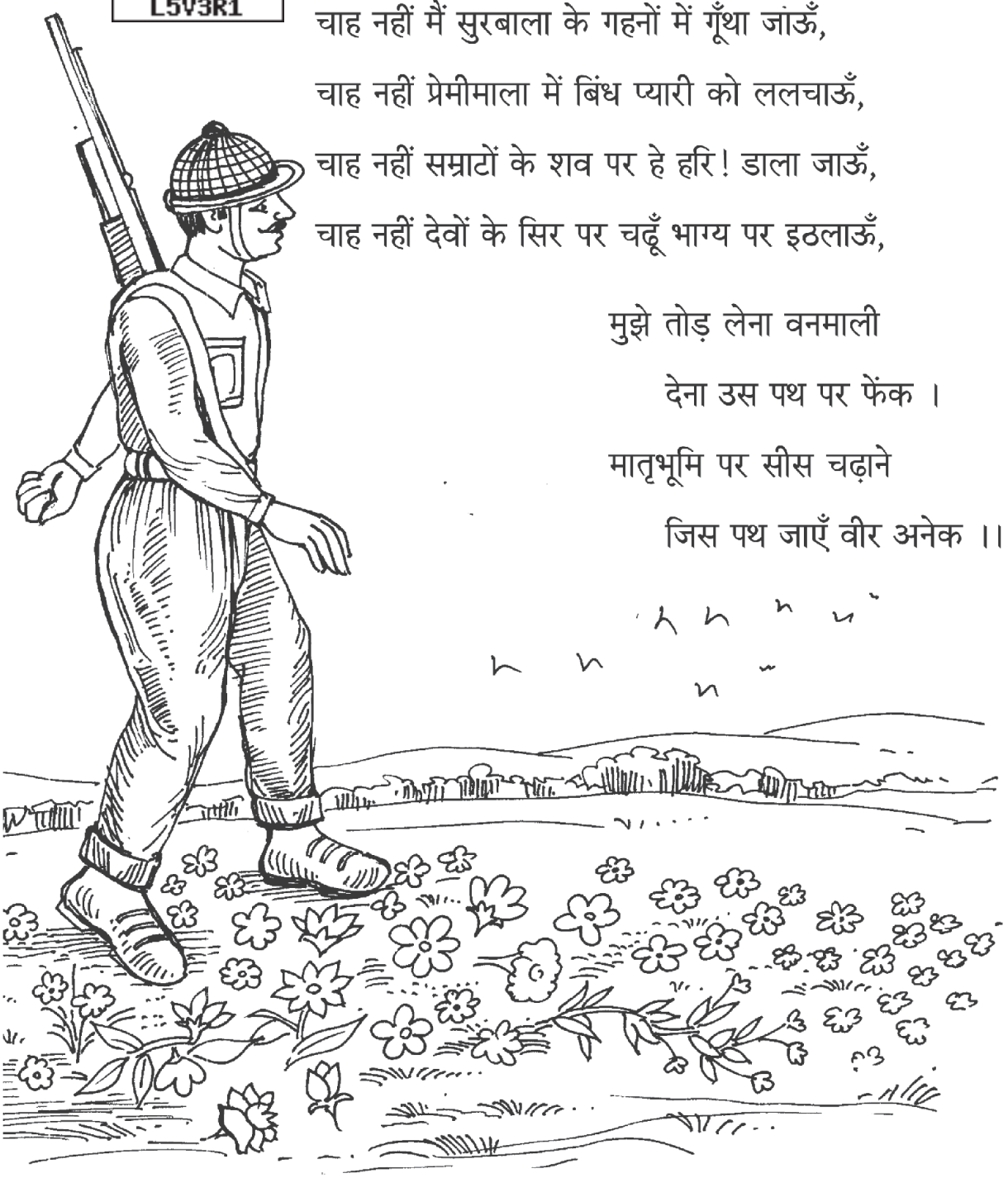

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जांऊँ,
चाह नहीं प्रेमीमाला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,

मुझे तोड़ लेना वनमाली
देना उस पथ पर फेंक ।
मातृभूमि पर सीस चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।।

शब्दार्थ :

चाह - इच्छा, सुरबाला - देवकन्या, ललचाना - प्रलोभित करना, इठलाना - गर्व करना, सीस - सिर, वनमाली - भगवान, बाग का माली ।

भावबोध :

फूल संसार में सबसे सुंदर और प्रिय वस्तु है । उसे देवकन्याएँ अपने को सजाने के लिए इस्तेमाल करती हैं । वह वर-वधू के प्रेम की निशानी के रूप में वरमाला बनता है । राजा - सम्राटों के शव पर चढ़ाया जाता है । देवताओं के सिर पर फूल शोभा पाता है । ये सब बड़े-बड़े लोग हैं । लेकिन फूल की इच्छा है कि वह मातृभूमि के लिए अपने प्राण देने वाले सैनिकों के पैरों के नीचे पड़ा रहे । अर्थात् वह मातृभूमि के भक्तों को सबसे ज्यादा चाहता है ।

अनुशीलनी

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) पुष्प की क्या अभिलाषा नहीं है ?

(ख) पुष्प वनमाली से क्या कहता है ?

2. नीचे के प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(क) क्या पुष्प देवकन्या के गहने में गूँथा जाना चाहता है ?

(ख) फूल का देवताओं के सिर पर चढ़ना कैसी बात है ?

(ग) 'सैनिक सीस चढ़ाते हैं'- का क्या मतलब है ?

3. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए :

(क) पुष्प सुरबाला के क्या बनना नहीं चाहता ?

(i) काजल (ii) साड़ी (iii) गहनों में गूँथा जाना (iv) शीशफूल

(ख) देवताओं के सिर पर चढ़कर पूल किस पर इठलाना नहीं चाहता ?

(i) जीवन (ii) भाग्य (iii) उम्र (iv) रूप

(ग) किनके शवों पर फूल चढ़ना नही चाहता ?

(i) पशुओं के (ii) पक्षियों के (iii) सम्राटों के (iv) नेताओं के

(घ) वीर अपने पथ पर क्यों जाते हैं ?

(i) फूल पर पैर रखने (ii) फूल तोड़ने (iii) मातृभूमि पर सीस चढ़ाने

(iv) युद्ध क्षेत्र में लड़ने

4. खाली स्थान भरिए :

(i) सुरबाला के गहनों _____ गूँथा जाऊँ ।

(ii) प्रेमी-माला में बिंध प्यारी _____ ललचाऊँ ।

(iii) देवों के सिर _____ चढ़ूँ ।

(ii) उस पथ _____ तुम देना फेंक ।

5. 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए:

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ**
सुरबाला	शव
सम्राट	प्यारी
मातृभूमि	वीर
प्रेमीमाला	गहने

भाषाकार्य

1. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

सीस, सुरबाला, चाह, वनमाली

आपके लिए काम :

(क) इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।

(ख) आप मातृभूमि के लिए क्या-क्या करना चाहते हैं ?

(ग) आपने कई तरह के फूल देखे होंगे । सफेद, लाल, पीले । ये सुन्दर फूल मुलायम और सुगन्धित होते हैं । अपने आस-पास दीखने वाले कुछ फूलों के नाम लिखिए ।

सफेद	लाल	पीले
१.	१.	१.
२.	२.	२.
३.	३.	३.
४.	४.	४

●

हम क्या-क्या जानते हैं

1. हम बिन्दी (ं) और चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाना जानते हैं । नीचे लिखे शब्दों में यथास्थान (ं) या (ँ) लगाइए । जैसे : कद - कंद, हंस - हँस ।

बद	बूद	प्रशसा	चिपकाये	सब्जिया
अध	अधेरा	आरभ	दात	जहा
हस	हसना	सतरा	सुदर	ऋतुए
घटा	अगूर	बैगन	मा	पाऊ
पथ	कगन	सकेत	शख	पढ़े
शशाक	माग	निमत्रण	वहा	उमग
पक	गेद	लिखे	पाच	बाध
बदर	गदा	लबा	बनाए	काव-काव
व्यजन	चचल	पक्ति	ढूढ़ना	गगा
चिड़िया	ककड़	डक	नदिनी	आच
रग	रगना	हू	आख	मास
चद	चाद	सयुक्त	मै	हा
पख	पाख	गाव	मूगफली	पाव

2. हम ऐसे संयुक्त वर्ण जानते हैं । दिए गए शब्दों के आधार पर शब्द लिखिए:

पक्का	ध ____	सत्य	नृ ____	रक्त	श____
बच्चा	क ____	क्यारी	न्या ____	उत्कल	त ____ ल

पट्ट	क ___ र	ज्ञान	वि ___ न	छुट्टी	प ___
पत्ता	स ___	अस्पताल	___ र्श	मर्द	स ___
पन्ना	स ___ टा	कुल्ला	मुह ___	दन्त	स ___
रद्द	जि ___	सस्ता	ब ___	अन्दर	ब ___ र
गर्म	श ___	त्राण	त्रा ___	पत्र	चि ___
नक्र	च ___	सज्जा	ध ___	अच्छा	इ ___
कर्म	म ___	कब्ज	स ___	बुद्धि	शु ___
ड्रामा	क ___	धन्य	अ ___	कम्बल	स ___ ल
धर्म	म ___	चित्र	मि ___	किस्सा	र ___
पप्पु	च ___ ल	अल्प	शि ___	सम्मान	अ ___
वस्त्र	शा ___	राजस्व	सर्व ___	प्यार	___ स
पुष्ट	क ___	जन्म	त ___ य	बट्टा	स ___
कनिष्क	पु ___ र	चञ्चल	का ___ न	सख्त	त ___
अवश्य	___ म	जञ्जाल	म ___ ल	ह्रास	___ स्व

3. आप ऐसी शब्दसूची बनाइए जिसमें संयुक्त व्यंजन हों ।
4. शिक्षकों से निवेदन है कि इस कार्य में विद्यार्थियों की सहायता करें ।

हम ऐसे-ऐसे लिखना जानते हैं :

1. कङ्कन - कंगन, शङ्ख - शंख, गङ्गा - गंगा
2. चञ्चल - चंचल, मञ्जुल - मंजुल, झञ्झा - झंझा

3. टण्डन - टंडन, घण्टा - घंटा, ठण्डा - ठंडा

4. सन्त - संत, दन्त - दंत, तन्तु, - तंतु

5. चम्पा-चंपा, बिम्ब-बिंब, सम्भव-संभव

6. ऊपर दिए गए उदाहरणों के अनुसार शब्दों को पुन: लिखिए :

मण्डन	मंडन	चन्दन	_____	सुन्दर	_____
कुञ्ज	_____	मञ्चन	_____	सम्भाल	_____
कम्बल	_____	तन्दूर	_____	मन्दिर	_____
सङ्केत	_____	सम्पन्न	_____	कम्पन	_____
सन्तान	_____	डण्डा	_____	डण्ठल	_____
आरम्भ	_____	आनन्द	_____	शान्ति	_____
पाञ्चाल	_____	झञ्झा	_____	कुन्द	_____

7. देखिए, निम्नलिखित शब्दों में सिर्फ अनुस्वार का प्रयोग होता है:

संयम संशय संलाप संहार

●

कुएँ के मेढ़क

संकलित

अनुपम भुवनेश्वर में रहता है । एक दिन उसकी नानी उनके घर आयीं । अनुपम बहुत खुश हुआ । उसने नानी के पाँव छुए । नानी भी बहुत खुश हुईं । रात को नानी ने एक अच्छी कहानी सुनायी । बोलीं -

हमारे गाँव में एक बहुत बड़ा कुआँ है । उसमें चार-छह मेढ़क रहते थे । दिन-रात उछलते-कूदते और टर्र-टर्र करते थे । वे मानो कुएँ के मालिक बने हुए थे । वे ऊधमी और शरारती हो गए थे ।

एक बार भारी वर्षा हुई । कुएँ में पानी भर गया और बाहर आने लगा । पानी की उस बाढ़ में मेढ़क बाहर निकल आये । बाहर की खुली दुनिया उनके सामने थी । वे खुशी से फूल उठे । इधर-उधर उछलने लगे । उनमें जो सबसे ज्यादा शरारती था, किसीका सुनता न था । वह सड़क पर फुदक रहा था । अचानक एक गाड़ी आ गई । वह ऐंठकर उछलने लगा और पहिये के नीचे जा गिरा । बच गया । दूसरा अपने को बड़ा बजरंगबली मानता था । लम्बा कूदता था । इतने में एक साँप मुँह बाये आ पहुँचा । मेढ़क छिपकर बच गया । तीसरा भी बड़ा घमण्डी था । छाती फुलाकर कहता– मेरी बराबरी करने वाला अभी पैदा नहीं हुआ । तभी-उधर से एक साइकिल सर्र से निकल गई । मेढ़क की पिछली टाँग टूट गई ।

पास की एक ढूह पर एक मेढ़की अपने बच्चों के साथ यह सब देख रही थी । उसने अपने बच्चों से कहा- ''देखो बच्चो ! खबरदार, बाहर निकलो तो अपने को बचाना सीखो । संभलकर चलो । आफत से बचो ।''

यह सुनकर अनुपम दु:खी हुआ । लेकिन डरा नहीं । उसने नानी से पूछा - ''नानी जी, हम घर से बाहर निकलें तो क्या करें ?''

नानी ने समझाया - ''देखो बेटे, पहली बात है कि अपने को काबू में रखना । इसका मतलब है कि अपने को बड़ा न मानना । यह विनय का भाव है । गुस्सा न करना । घमंड न करना । ऐसा बर्ताव सबको अच्छा लगता है । तुम विनयी होगे तो दूसरे तुमसे प्यार करेंगे ।

दूसरी बात, कीड़े-मकोड़े और जानवर अपने को बचाते हैं । लेकिन आदमी के बच्चे दूसरों के साथ मिलजुल कर रहना सीखते हैं । घर में माता-पिता की बात मानना, भाई बहनों के साथ रहना, स्कूल में मित्रों के साथ अच्छा बर्ताव करना, उनको सीखना चाहिए । घर हो या बाहर तुम्हारा व्यवहार दूसरों को बुरा न लगे, किसी को असुविधा न हो, किसी का दिल न दुखे-इस ओर सावधान रहना । दूसरों से झगड़ना, नाराज होना, गाली-गलौज करना, चिल्लाना, जिद्द करके अकड़ना, बिना पूछे दूसरों की चीज छूना, दूसरों के काम में दखल देना जैसे आचरण अशिष्ट माना जाता है । इसका मतलब है अपनी बुरी आदतों को रोकना, अपने मन और भावों को काबू में रखना जरूरी है । यह भद्र व्यवहार कहलाता है ।

अनुपम बोला- इसीलिए हमें स्कूल में कई बातें सिखाते हैं । जोर-जोर से नहीं बोलना चाहिए । बड़ों और गुरुजनों का सम्मान करना, सहपाठियों से सौहार्द भाव रखना,

छोटों को स्नेह करना, अपनी बारी का इंतजार करना, अनुशासन मानकर लाईन बनाकर चलना चाहिए । स्कूल के नियम, ट्रैफिक के कानून नहीं तोड़ना चाहिए । हैं न ?

नानी बोली- हाँ बेटा । तुम तो होशियार हो । जान लो । अपने अच्छे बर्ताव से लोग दोस्त बनेंगे, बुरे आचरण से दुश्मन बन जाएँगे । यह तुम्हारा काम है । जानवर से आदमी अच्छा है, क्योंकि उसका आचरण सभ्य होता है । सारा विश्व उसका मित्र हो सकता है ।

शब्दार्थ :

नानी - माँ की माँ, ऊधमी शरारती - दुष्ट, ढूह - मिट्टी का टीला, काबू - संयम, घमंड- गर्व, अशिष्ट - असभ्य, अभद्र, सौहार्द - मित्रता, दुश्मन - शत्रु ।

विचार विश्लेषण :

आदमी घर से बाहर निकलते ही उसे दूसरों के साथ मिलना-जुलना पड़ता है । दूसरे लोगों के साथ मेल में उसका व्यवहार कैसा हो, यह सवाल है । यह आवश्यक है कि सबको समान मौका मिले और समाज में शांति रहे । सभी का आचरण भी अच्छा होना चाहिए । यह शिष्टता, भद्रता और सभ्यता का तकाजा है ।

अनुशीलनी

1. इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) भारी वर्षा हुई तो क्या हुआ ?

(ख) बाहर निकले मेढ़कों की क्या हालत हुई ?

(ग) आदमी घर से निकले तो पहले क्या करे ?

(घ) कैसा व्यवहार अशिष्ट समझा जाता है ?

(ङ) शिष्टता किन-किन कामों में है ?

(च) आदमी के दोस्त या दुश्मन कैसे बनते हैं ?

2. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) अनुपम कहाँ रहता है ?

(ख) एक दिन क्या हुआ ?

(ग) कुएँ में कौन थे ?

(घ) बाढ़ आने पर मेढ़कों की क्या दशा हुई ?

(ङ) पहले मेढ़क की क्या हालत हुई ?

(च) तीसरे मेढ़क का स्वभाव कैसा था ?

(छ) मेढ़की ने अपने बच्चों से क्या कहा ?

(ज) विनयी होने का क्या मतलब है ?

(झ) आदमी के बच्चों को क्या करना चाहिए ?

3. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) किसने कहानी सुनायी ?

(ख) मेढ़क सड़क पर क्या करने लगे ?

(ग) मेंढ़क की कौन-सी टाँग टूट गई ?

(घ) अपने अच्छे बर्ताव से लोग क्या बनेंगे ?

4. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(क) आदमी जानवर से अच्छा है, क्यों कि उसमें ज्यादा

(i) बल है (ii) बुद्धि है (iii)सुन्दरता है (iv) नम्रता है

(ख) विनय का भाव क्या है ?

(i) अपने को बड़ा मानना

(ii) अपने को बड़ा न मानना

(iii) दूसरे को पीटना

(iv) दूसरे के साथ नाचना

(ग) बड़ों और गुरुजनों का क्या करना चाहिए?

(i) सम्मान करना

(ii) स्नेह करना

(iii) आदर करना

(iv) इंतजार करना

भाषाकार्य

5. इन शब्दों को देखिए । इनके दो रूप होते हैं :

आयी	-	आई	हुयी	-	_____
गये	-	गए	आये	-	_____
चाहिये	-	_____	लिखिये	-	_____
नयी	-	_____	सुनायी	-	_____
दीजिये	-	_____	कीजिये	-	_____

गया, आया, हुआ रूप सही है ।

गआ, आआ, हुया नहीं होता ।

6. सही वर्तनी लिखिए :

पहिआ, विस्व, सोहाद्र, बजरगं, छाति, एंठ, काबु, नानि, पुछा, भाइ, बर्ताव, असिस्ट, भर्द, दुसरा

7. निम्नलिखित वाक्यों को सुधार कर लिखिए :

(i) एक बार भारी वर्षा हुआ ।

(ii) दूसरों के झगड़ना अच्छी बात नहीं ।

(iii) आदमी के आचरण सभ्य होता है ।

(iv) उसका पिछला टाँग टूट गया ।

(v) वह मेरा ओर देखने लगा ।

जानिए :

निम्नलिखित शब्दों को देखिए । इन्हें 'संज्ञा' शब्द कहते हैं । संज्ञा शब्द कर्ता या कर्म हो सकते हैं ।

कुआँ, मेढ़क, वर्षा, बाढ़, पानी, रात, कहानी, अनुपम, भुवनेश्वर, मालिक, साँप, बच्चा, खुशी, टोली, आदत, सौहार्द, मित्रता, कक्षा

इन संज्ञा शब्दों को निम्नलिखित वर्गों में सजाइए :

(क) व्यक्तिवाचक

(ख) द्रव्यवाचक

(ग) जातिवाचक

(घ) समूहवाचक

(ङ) भाववाचक

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

उसने नानी के पाँव छुए।

उसमें चार-छह मेढ़क रहते थे।

वे शरारती हो गए थे।

वह सड़क पर फुदक रहा था।

तुम तो होशियार हो।

इन वाक्यों में रेखांकित पद हैं : उसने, उसमें, वे, वह, तुम। ऐसे शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

8. उचित संज्ञा और विशेषण शब्दों को जोड़िए :

'क'	**'ख'**
अच्छी	दुनिया
भद्र	आदत
भारी	साँप
बड़ा	वर्षा
बुरी	व्यवहार
खुली	कहानी

9. उदाहरण के अनुसार वचन बदलिए:

(i) घर — घर
मेढ़क —
पाँव —
साँप —

(ii) रात — रातें
सड़क —
साइकिल —
टाँग —

स्कूल —

दुश्मन —

(iii) कुआँ-कुएँ

पहिया —

बेटा —

बच्चा —

कीड़ा —

लड़का —

दूह —

आदत —

(iv) कहानी-कहानियाँ

गाड़ी —

डाली —

नदी —

लड़की —

10. समानार्थी शब्द लिखिए:

दुश्मन, सौहार्द, अशिष्ट, दूह, ऊधमी

11. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलिए:

नानी, मेढ़की, बहन, माँ

12. विशेषण छाँटिए:

(क) बाहर, अचानक, दु:खी

(ख) मतलब, अशिष्ट, व्यवहार

(ग) जरूरी, बात, उसने

(घ) शरारती, खुशी, के साथ

(ङ) सम्मान, गुरुजन, होशियार

(च) अच्छा, जानवर, चाहिए

(छ) कुआँ, बड़ा, चिल्लाना

●

एक बूँद

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी,
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह ! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी !

दैव, मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में,
या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में ।

बह गई उस काल एक ऐसी हवा,
वह समुंदर ओर आई अनमनी,
एक सुंदर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा पड़ी, मोती बनी ।

लोग यों ही हैं झिझकते सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर,
किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर ।

शब्दार्थ :

गोद - क्रोड़, कढ़ी - चली / निकली, दैव - विधाता, बदा - लिखा, चू पड़ना - टपकना / नीचे गिरना, समुंदर - सागर, अनमनी - मन कहीं और होना, सीप - जिसमें मोती भरता है, झिझकना - आगा पीछा करना/ दुविधा, लौं - तरह, अकसर - प्राय: ।

भावबोध :

जीवनपथ में आगे बढ़ना जरूरी है । भविष्य में क्या होगा कहा नहीं जा सकता । फिर भी अच्छा होगा ऐसा सोचना चाहिए । बूँद नीचे गिरती है । मेघ उसका घर है, उसे छोड़ देती है । वह सागर से मिलती है या सीप के मुँह में पड़कर मोती बन जाती है । लोग घर छोड़ना अर्थात् कोई काम करना या जोखिम उठाना नहीं चाहते । क्योंकि उन्हें डर बना रहता है । कवि उनको आशा की रोशनी दिखाकर कहता है कि जोखिम उठाने से कुछ अच्छा ही होगा ।

अनुशीलनी

1. नीचे लिखे प्रश्नो के उत्तर दीजिए:

(क) बादलों की गोद से निकलकर बूँद क्या सोचने लगी ?

(ख) बूँद हवा में बहकर किस ओर पहुँची ?

(ग) घर छोड़ते हुए लोगों के मन में झिझक क्यों होती है ?

(घ) बूँद कैसे मोती बनी ?

(ङ) 'बूँद की तरह कुछ और बन जाना'- का अर्थ क्या है ?

2. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) विधाता के बारे में बूद क्या सोचती है ?

(ख) सीप के मुँह में घुसने के बाद बूँद का क्या हुआ ?

(ग) बूँद किस पर टपकने से डरती है ?

(घ) बूँद अंगारे पर गिरकर क्या होने की आशंका करती है ?

(ङ) बादलों से निकलकर बूँद किस पर चू पड़ने से डरती है ?

(च) घर छोड़ने पर लोगों की मनोदशा क्या होती है ?

3. सभी विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए:

(क) बूँद कहाँ से निकली ?

(i) आसमान से (ii) बादलों (iii) सागर (iv) पानी

(ख) बूँद किस पर गिरकर जलने की बात कहती है?

(i) कमल (ii) अँगारे (iii) धूल (iv) पानी

(ग) आगे बढ़ते हुए बूँद कैसा अनुभव कर रही थी?

(i) आनंद (ii) दु:ख (iii) पच्छतावा (iv) निराश

(घ) बूँद किसमें चू पड़ना चाहती है?

(i) कमल में (ii) पानी में (iii) पेड़ में (iv) पत्तों में

(ङ) घर छोड़ना पड़े तो क्या होगा?

(i) मरना होगा (ii) कुछ और होगा (iii) चलना होगा (iv) डरना होगा

भाषा कार्य

1. शून्य स्थान भरिए:

(क) ——————निकलकर—————-की गोद से।

(ख) ——————, मेरे भाग्य में है क्या——————।

(ग) मैं——————- या मिलूँगी————-में।

(घ) —————— पड़ूँगी या—————के फूल में।

(ङ) एक सुन्दर————- का था मुँह————।

(च) लोग—————-ही हैं——————सोचते।

(छ) बूँद—————-कुछ और ही———— है कर।

2. ऐसे शब्दों को कविता से ढूँढकर लिखिए:

(जैसे-बढ़ी-कढ़ी)

ज्यों —

बचूँगी —

धूल —

मोती बनी —

घर —

जलूँगी —

3. इन शब्दों के अर्थ लिखिए:

कढ़ी, दैव, बदा, लौं, ज्यों, चू पड़ना।

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए:

बादल, कमल, समुंदर, घर, भाग्य, दैव

आपके लिए काम :

(क) 'एक बूँद' कविता को कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

(ख) इस प्रकार की कोई अन्य कविता छाँटिए और उसे कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

●

घोड़े ने जान बचायी

संकलित

युद्ध ! जंग ! लड़ाई ! संग्राम !!

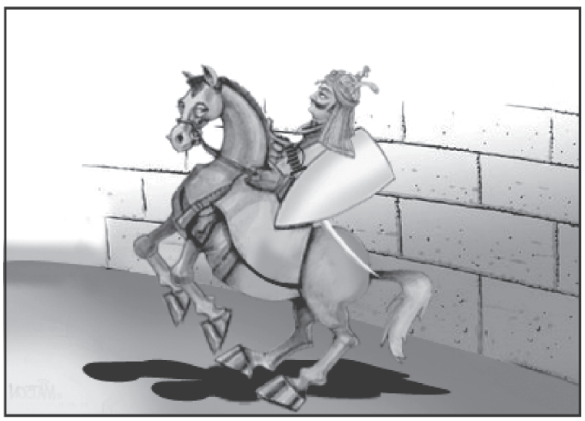

संग्राम महाराणा प्रताप का साथी था । उनका जीवन ही रणक्षेत्र था । न तो वे कभी संग्राम से डरते थे, न उनके वीर सैनिक ही । सवेरा हुआ नहीं कि वे कवच पहन कर, हाथ में तलवार लेकर, निकल पड़ते थे । अकबर बादशाह की फौज से कहीं-न-कहीं मुकाबला हो जाता था । अकबर राणा को अपने कब्जे में करना चाहता था । प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी - प्राण दूँगा पर मेवाड़ को मुक्त करूँगा ।

लड़ाई के मैदान में राणा का प्राणप्यारा साथी था - उनका घोड़ा चेतक । चमचमाता श्याम रंग । गठा हुआ शरीर । चेतक घोड़ा किसी वीर से कम न था । वह भी जैसे युद्धविद्या जानता था । दुश्मन की हर चाल को यह पहचान लेता था । ऐन वक्त पर ऐसा उछलता कि दुश्मन का वार खाली जाता । रण में उसने कई बार राणा की जान बचायी थी । राणा उस पर सवार होते तो वह बहुत खुश होता । घुड़सवार के लिए उसके घोड़े का होशियार होना बहुत जरूरी है ।

आज राणा प्रताप बड़ी लड़ाई में जा रहे थे । हल्दी घाटी की सँकरी पहाड़ी गली । विशाल मुगल सेना का यहीं आसानी से सामना किया जा सकता है । वैसे तो वे पहले कई बार बादशाही फौज़ से लोहा ले चुके थे । कभी

जीतते, कभी हार जाते । मगर आज की लड़ाई तो हर हालत में जीतनी होगी । मुगल राजपूती शौर्य की शान देखें । राणा ने चेतक की पीठ थपथपायी । चेतक ने कान फड़फड़ाये । राणा ने पुचकारा तो वह पूँछ हिलाने लगा । जैसे हिनहिनाकर बोला- 'राणा ! मैं तो तुम्हें लेने को हरदम तैयार हूँ ।'

अपनी मुट्ठीभर सैनिक लेकर राणा हल्दीघाटी में उतरे, माथे पर चुटकी भर धूल लगायी । मातृभूमि को प्रणाम कर ही रहे थे कि मुगलिया फौज टिड्डियों की भाँति आ धमकी । राणा ने देखा - शाहजादा सलीम जंग जीतने आया है । उन्होंने बड़ी फुर्ती से हमला किया । सलीम का हाथी मारा गया, लेकिन वह बच गया । उसकी फौज राणा पर आँधी-सी टूट पड़ी । प्रताप की तलवार मानों फसल काटने लगी । अनगिनत सैनिक मारे गए । अब मुगलों ने राणा को घेर लिया । उनके सिर पर मुकुट था । मुकुट को देख फौजी उन पर हमला करते थे । राणा अकेले पड़ गए । उन पर कई चोटें आईं । पर पीछे हटना वे जानते ही नहीं थे ।

दूर से झाला वीर मान्ना ने प्रताप की बुरी हालत देखी । वह उनकी तरफ झपटा । ''जय, महाराणा की जय ।'' आवाज गूँज उठी । मान्ना ने पीछे से मुकुट छीन कर अपने सिर पर रखा । बोला - राणा, आपके घाव गहरे हैं । मेरी बात मानिये । अपनी जान बचाइए । आप रहेंगे तो हमारी लड़ाई चलती रहेगी । अभी मैं इनके लिए काफी हूँ ।

चेतक तो पहले भाँप चुका था कि राणा जख्मी हो गए हैं । उसने ये बातें सुनीं । अब वह राणा को लेकर बेतहाशा भागा। उनका हुक्म नहीं माना । झाड़-झंखाड़ों में तेजी से भागना तो उसका खेल था । आज वह ऐसा कूद रहा था, जैसे कभी नहीं कूदा । राणा चिल्ला उठे - ''चेतक ! चेतक ! यह क्या कर रहा है ? लोग मुझे भगोड़ा समझेंगे । रुक-जा ।'' इधर चेतक हाँफने लगा । वह लड़खड़ाया । फिर भी उछला । सामने नाला था । उसे कूद कर पार किया । फिर धड़ाम् से गिरा । राणा ने देखा - उसकी छाती में तलवार भोंक दी गई है । खून की धारा बह रही है । प्रताप रोने लगे । उनके सामने ही चेतक ने दम तोड़ दिये ।

राणा का भाई शक्ति सिंह मुगलों के साथ था । उसने सारा माजरा देखा । राणा का पीछा करके फौरन आ पहुँचा । प्रताप ने उसे देखा तो बोले - ''आ जा शक्ति ! मेरी गर्दन उड़ा दे । अपने चेतक के बिना मैं जी नहीं सकता ।''

शक्ति प्रताप के पाँवों पर गिरा । बोला - ''भैया, मुझे माफ कर दो । झाला और चेतक ने मेरी आँखें खोल दीं । मैं भी वतन के लिए ही जान दूँगा । दोनों फूट फूट कर रोने लगे ।

अपनी वीरता, समझदारी और वफादारी के लिए 'चेतक' नाम अमर हो गया । उसने प्रताप की जान बचायी । राजपूती शान बचायी । खुद प्राण दे दिए । आज भी राजस्थान के चौके - चौराहे, रास्ते, भवन सब पर चेतक की मूर्त्तियाँ खड़ी हैं ।

शब्दार्थ :

जान - प्राण, जंग - युद्ध, कवच - शरीर रक्षा का आवरण, फौज - सेना, ऐन वक्त- ठीक समय पर, उछलना - कूदना, प्रतिज्ञा - प्रण, फौरन - तुरंत, वार - आक्रमण, हमला, लोहा लेना - लड़ाई करना, फुर्ती से - जल्दी से, आँधी - तूफान, बेतहाशा - बड़ी तेजी से, रफ्तार - गति, जख्मी - घायल, हालत - अवस्था, वफादार- विश्वासी, दम तोड़ना - मर जाना, माजरा - दृश्य, टिड्डियाँ - एक प्रकार के पतंगे हैं जो दल बाँधकर आती हैं और पेड़ - पौधों के पत्तों को फौरन खा जाती हैं । तलवार भोंक दी - तलवार घुसा दी ।

विचार विश्लेषण :

यह एक ऐतिहासिक घटना है जो मनुष्य और उसके पालतू जानवर के प्यार भरे संबंध को दर्शाती है । राणा प्रताप ऐसे राजपूत वीर थे जो अकबर का बराबर सामना करते रहे । उनका घोड़ा था चेतक । उसकी समझदारी और वफादारी की यह कहानी है ।

अनुशीलनी

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) राणा प्रताप सवेरा होते ही क्या करते थे ?

(ख) चेतक के रूप-गुणों का वर्णन-कीजिए ।

(ग) हल्दी घाटी में हुए युद्ध का वर्णन कीजिए ।

(घ) युद्ध में प्रताप ने क्या किया ?

(ङ) चेतक प्रताप को लेकर कैसे भागा ?

(च) राणा चेतक की मौत से क्यों दु:खी हुए ?

(छ) चेतक का नाम क्यों अमर हुआ ?

(ज) आज चेतक की मूर्तियाँ कहाँ-कहाँ मिलती हैं ?

(झ) शक्ति सिंह को किन से और क्या शिक्षा मिली ?

2. इन प्रश्नों का जवाब एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) राणा प्रताप का जीवन कैसा था ?

(ख) लड़ाई में राणा का साथी कौन था ?

(ग) चेतक युद्ध के मैदान में क्या करता था ?

(घ) चेतक देखने में कैसा था ?

(ङ) घोड़े का होशियार होना क्यों जरूरी है ?

(च) राणा ने चेतक की पीठ थपथपायी तो उसने क्या जवाब दिया ?

(छ) झाला वीर ने मुकुट अपने सिर पर क्यों रखा ?

(ज) प्रताप की तलवार फसल काट रही थी । इसका क्या मतलब है?

(झ) मान्ना ने प्रताप से चले जाने को क्यों कहा ?

(ञ) राणा चेतक को क्यों रोक रहे थे ?

(ट) चेतक क्यों भागा ?

(ठ) चेतक क्यों गिर पड़ा ?

(ड) शक्ति सिंह प्रताप के पाँव क्यों पड़ा ?

3. सही विकल्प चुनकर लिखिए:

(क) महाराणा प्रताप का साथी कौन था?

(i) ज्ञान (ii) संग्राम (iii) पूजा (iv) वार्तालाप

(ख) प्रताप ने कहा-'प्राण दूँगा पर मुक्त करूँगा', किससे ?

(i) चेतक (ii) दुश्मन (iii) मेवाड़ (iv) शक्ति सिंद

(ग) चेतक ने क्या फड़फड़ाए ?

(i) हाथ (ii) पूंछ (iii) कान (iv) पीठ

(घ) सलीम का क्या मारा गया ?

(i) घोड़ा (ii) कुत्ता (iii) चेतक (iv) हाथी

(ङ) कौन प्रताप के पाँवों पर गिरा ?

(i) सलीम (ii) अकबर (iii) शक्ति सिंह (iv) चेतक

भाषाकार्य

1. इन शब्दों के लिंग बताइए :

युद्ध, जंग, लड़ाई, संग्राम, जीवन, सैनिक, कवच, तलवार, मुकाबला, कब्जा, जान, फौज, सेना, प्रतिज्ञा, देह, शरीर, हालत, पीठ, गर्दन, जीभ, पूँछ, जीत, हार, गली, पहाड़ी, घाटी, फसल, आँधी, आवाज, जय, चोट, छाती, धारा, आँख, कान, मूर्त्ति, वीरता, वफादारी, समझ, समझदारी

नोट : हिन्दी में प्रत्येक शब्द का लिंग जानना जरूरी है । क्यों ? शिक्षक से और व्याकरण की पुस्तक से समझो ।

2. वचन बदलिए :

घोड़ा, आदमी, लड़ाई, आँख, कान, घाव, कवच

3. समानार्थी शब्द लिखिए :

युद्ध _____ _____ _____ फौज _____ _____ _____

ज़ान _____ _____ _____ वक्त _____ _____ _____

प्रतिज्ञा _____ _____ _____ घाव _____ _____ _____

छाती _____ _____ _____

4. 'क' विभाग के विशेषण शब्दों को 'ख' विभाग के संज्ञा शब्दों से जोड़िए:

'क'विभाग	**'ख'विभाग**
खाली	चाल
गठा हुआ	वक्त
हरा	सैनिक
ऐन	शरीर
विशाल	वार
मेरी	फौज
अनगिनत	गर्दन
बादशाही	सेना

5. निम्नलिखित वाक्यों में एक-एक सर्वनाम है, उनको छाँटकर लिखिए:

(क) उन पर कई चोटें आईं।

(ख) आप रहेंगे तो लड़ाई चलती रहेगी।

(ग) मैं काफी हूँ।

(घ) उन्होंने बडी फुर्ती से हमला किया।

(ङ) वह बेतहाशा भागा।

6. निम्नलिखित शब्दों में से संज्ञाओं को छाँटिए:

लड़ाई, खाली, लोहा, दुश्मन, खुश, घोड़ा, मूर्ति, वीरता, बोला, के साथ, उनके, हुक्म, गठा, प्यारा, प्राण, भाई, गर्दन, मेरी।

7. कोष्ठक में से सही परसर्ग चुनकर शून्य स्थान भरिए:

(ने, को, से के लिए, में)

(क) प्रताप————–प्रतिज्ञा की थी।

(ख) वह किसी वीर——- कम न था।

(ग) रण——————-उसने राजा की जान बचाई थी।

(घ) वह राणा————-लेकर बेतहाशा भागा।

(ङ) मैं भी वतन————–जान दूँगा।

जानिए :

- **इन वाक्यों को देखिए । कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति लगी है तो वाक्य कैसे बदल जाते हैं । क्रिया कर्त्ता के अनुसार नहीं चलती । 'ने' भूतकाल में ही प्रयुक्त होता है ।**

  राणा ने प्रतिज्ञा की थी ।

  उसने राणा की जान बचाई ।

  राणा ने चेतक की पीठ थपथपायी ।

  मान्ना ने प्रताप की बुरी हालत देखी ।

  उन्होंने फुर्ती से हमला किया ।

  चेतक ने दम तोड़ दिए ।

  चेतक ने मेरी आँखें खोल दीं।

- **इन विशेष कथनों को (मुहावरों को) शिक्षक समझा दें ।**

  लोहा लेना, जान बचाना, पीठ थपथपाना, दम तोड़ देना ।

- **आपके लिए काम :**

  किसी और एक वीर के बारे में लिखिए।

प्रकृति का संदेश

सोहनलाल द्विवेदी

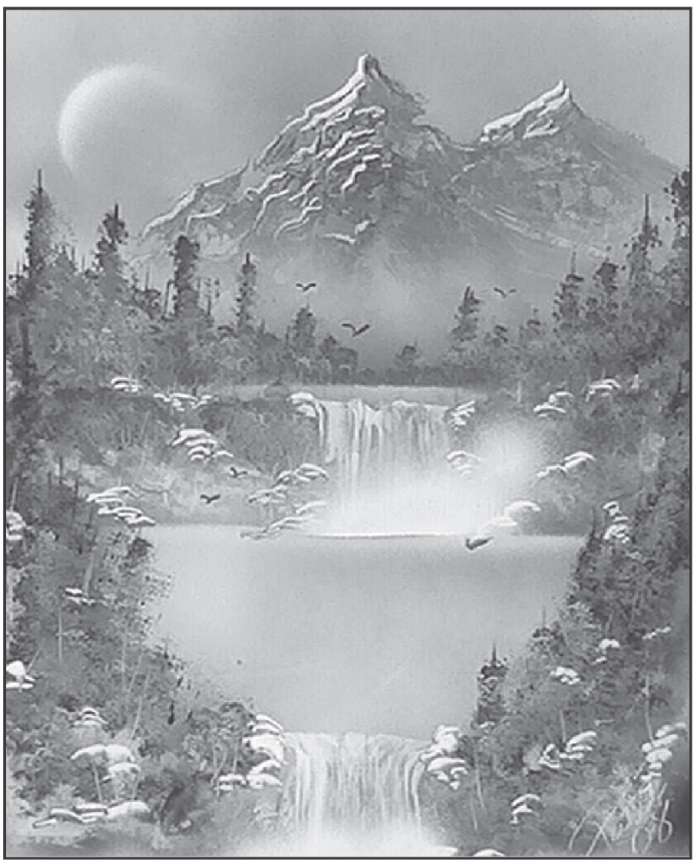

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ ।
सागर कहता है लहराकर
मन में गहराई लाओ ।

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार ।
नभ कहता है फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग ?
भर लो, भर लो, अपने मन में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग ।

शब्दार्थ :

संदेश - खास बात, शीश - सिर। मस्तक, लहर - तरंग, गहराई - गहरापन, धैर्य - धीरज, भार - बोझ, नभ - आकाश। आसमान, फैलाव - विस्तार, मृदुल - कोमल, उमंग- आनन्द। उल्लास ।

भावबोध :

मानव घर से बाहर निकलता है तो प्रकृति के अनेक रूपों को देखता है । प्रकृति मानव की चिर सहचरी है । ऊँचे-ऊँचे पर्वत, वृक्षलताएँ, सागर, सरिता, सरोवर मनुष्य के अनेक भावों को जगाते हैं । प्रकृति को देख सभी खुश होते हैं ।

अनुशीलनी

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) पर्वत और सागर क्या-क्या कहते हैं ?

(ख) पृथ्वी का क्या कहना है ?

(ग) तरंग का संदेश क्या है?

(घ) नाम क्या कहता है?

(ङ) धैर्य न छोड़ने के लिए कौन कहती है?

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) पर्वत की ऊँचाई से हम क्या सीखें ?

(ख) मन में गहराई लाने का क्या मतलब है ?

(ग) हमारे सिर पर बोझ बढ़े तो हमें क्या करना चाहिए ?

(घ) नभ का फैलाव बहुत है, उससे हम क्या सीखें ?

(ङ) मीठी-मीठी मृदुल उमंग का क्या अर्थ है?

3. पंक्तियों को पूरा कीजिए :

(i) पर्वत कहता ____ उठाकर

(ii) तुम भी ____ बनजाओ ।

(iii) नभ कहता है ____ इतना।

(iv) भर लो, भर लो ____ मन में।

4. इन पंक्तियों के अर्थ समझाइए :

(i) नभ कहता है फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार ।

(ii) भर लो, भर लो, अपने मन में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग ।

5. 'क' स्तम्भ के शब्दों के साथ 'ख' स्तम्भ के शब्दों को जोड़िए :

'क'	'ख'
पृथ्वी	गहराई
पर्वत	उमंग
सागर	धैर्य
तरंग	ऊँचाई
आकाश	विस्तार

भाषाकार्य

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

पर्वत	_____	पृथ्वी	_____
नभ	_____	सिर	_____
संसार	_____	सागर	_____
मृदुल	_____	तरंग	_____

2. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

उठाना	_____	धैर्य	_____
मृदुल	_____	ढकना	_____
गहरा	_____	समझ	_____

3. इन शब्दों को लगाकर वाक्य बनाइए :

लहर, सारा, भार, तरंग, उमंग

●

भगवान के डाकिए

रामधारी सिंह 'दिनकर'

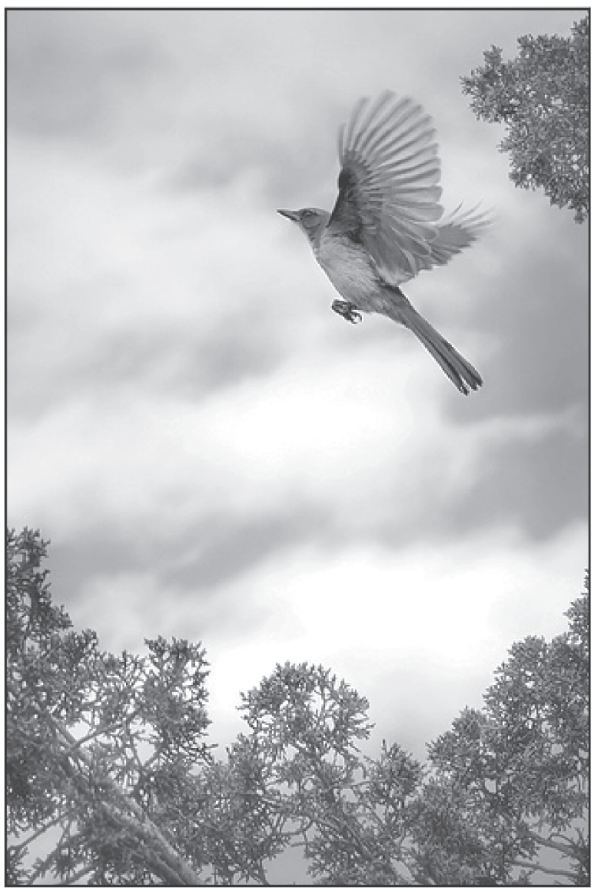

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं ।

हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है ।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है ।
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है ।

शब्दार्थ :

डाकिया - चिट्ठी लानेवाला, बाँचना - पढ़ना, सस्वर पढ़ना, आँकना - कल्पना करना, अनुमान करना, सौरभ - खुशबू, सुगंध, तिरता - तैरता, पाँख - पंख, पर ।

भावबोध :

कवि रामधारी सिंह दिनकर का कहना है पक्षी और बादल दोनों भगवान के लिए डाकिए का काम करते हैं । जैसे डाकिया घर-घर में चिट्ठी पहुँचाता है और अपने से दूर रहनेवालों की कुशल मंगल की सूचना भी देता है, ठीक उसी प्रकार पक्षी भी एक महादेश से दूसरे महादेश तक उड़-उड़ कर जाते हैं । जो पानी भाप बनकर आसमान की ओर

जाता है फिर बादल का रूप लेकर आसमान में घूम घूम कर हर जगह जाता है और पानी बनकर बरसता है । ऐसा लगता है मानो पक्षी और बादल हमारे सभी सुख दु:ख और आनंद उल्लास को दूर-दूर तक पहुँचाते हैं । भगवान की चिट्ठी की भाषा हम तो नहीं समझ पाते परंतु पेड़, पौधे, पानी, पहाड़ पढ़ पाते हैं ।

अनुशीलनी

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) पक्षी और बादल को कवि ने भगवान के डाकिया क्यों कहा ?

(ख) पक्षी और बादल भगवान के लिए क्या - क्या करते हैं ?

(ग) इस कविता के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश देना चाहते हैं ?

2. निम्नलिखित पदों के अर्थ समझाइए :

(क) मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं ।

(ख) और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है ।

3. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(क) भगवान के डाकिए कहाँ से कहाँ तक जाते हैं ?

(ख) हम क्या आँकते हैं ?

(ग) सौरभ कहाँ तिरता हैं ?

(घ) एक देश का भाप दूसरे देश में क्या बनकर गिरता है ?

4. एक शब्द में उत्तर दीजिए :

(क) पक्षी के अलावा भगवान के डाकिया और कौन है ?

(ख) पेड़, पौधे, पानी क्या बाँचते हैं ?

(ग) भाप जमीन पर क्या बनकर गिरता है ?

5. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(क) भगवान के डाकिए हैं-

(i) पानी और आग (ii) पक्षी और बादल (iii) पक्षी और पानी

(iv) बादल और हवा

(ख) एक देश की धरती दूसरे देश को भेजती है-

(i) पानी (ii) हवा (iii) सुगंध (iv) भाप

(ग) भगवान के डाकिए क्या लाते हैं?

(i) मिठाई (ii) चिट्ठि (iii) पुस्तक (iv) समाचार पत्र

(घ) जो दूसरे देश में पानी बनकर गिरता है, वह एक देश का क्या होता है?

(i) भाप (ii) बादल (iii) बर्फ (iv) धुआँ

भाषाकार्य

उदाहरणों के आधार पर

1. वचन बदलिए:

चिट्ठी—चिट्ठियाँ	पक्षी—पक्षी
नारी—	भाई—
नदी—	मुनि—
लीची—	अतिथि—

2. खाली जगहों पर उपयुक्त परसर्ग भरिए:

(क) वह दूसरे देश —— पानी बनकर गिरता है।

(ख) ये भगवान —— डाकिए है।

(ग) वे एक महादेश ——-दूसरे महादेश को जानते हैं।

(घ) एक देश——- धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है।

आप के लिए काम :

डाकिए की भूमिका पर पाँच वाक्य लिखिए ।

●

मैं चाँद से बोल रहा हूँ

संकलित

प्यारी बहन अंजना,

आज पूर्णिमा है । पूनम के चाँद को देखकर एक पुरानी बात याद आ गई । इसलिए यह पत्र लिख रहा हूँ ।

तब हम दोनों छोटे थे । रानी मौसी हमें छत पर ले जाती थीं । वहाँ चमचमाता चाँद देख हम कितने खुश होते थे ! वह यह गाना हमें सिखाती थीं-

चन्दा मामा दूर के
पूए पकाए नूर के
आप खाए थाली में
हम को दिया प्याली में ।

L7PA3J

वह बताती थीं कि चन्द्रमा सब के मामा हैं । माता लक्ष्मी और मामा चन्द्रमा एक साथ सागर से निकले थे । हम भी कैसे भोले थे कि उनकी बात मान लेते थे ।

उस समय चाँद पर जाना सपना था । आजकल तो लोग चन्द्रमा की सैर कर आते हैं । तुम्हें याद होगा जब सबसे पहले नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रमा पर पाँव रखा था तो सारी दुनिया खिल उठी थी । उसके बाद चन्द्रमा की कई यात्राएँ हो चुकी हैं । कुछ दिन पहले भारत का चन्द्रयान चन्द्रमा में जाकर तस्वीरें खींचता था । उन तस्वीरों से पता लगा कि चाँद में जल है । भारतीय वैज्ञानिकों की इस खोज से संसार के लोग खुश हुए । अमेरीका के 'नासा' संस्था ने चन्द्रमा में एक विस्फोट कराया । उससे यह प्रमाणित हुआ है कि चन्द्रमा में जल है । दुनिया के लोग चाँद पर जाने की तैयारी करने लगे हैं । वह दिन दूर

नहीं जब आदमी चन्द्रमा से धरती के लोगों से टेलीफोन पर बात करेगा । तब मैं तुम्हें पत्र नहीं, टेलीफोन से कहूँगा - मैं चाँद से बोल रहा हूँ । लेकिन पत्र का मजा कुछ अलग है न ! आशा है, तुम प्रसन्न होगी ।

तुम्हारा भाई

निशीथ

शब्दार्थ :

सैर - यात्रा, तस्वीर - फोटो, वैज्ञानिक - विज्ञान विषय जानने वाला, खोज-तलाश विस्फोट - बारूद से फोड़ना ।

अनुशीलनी

1. इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) रानी मौसी कौन-सा गाना सिखाती थी?

(ख) मौसी हमें क्या बताती थी?

(ग) संसार के लोग क्यों खुश हुए?

2. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए:

(क) निशीथ पत्र किसे लिख रहा है?

(ख) निशीथ और अंजना की खुशी का कारण क्या था?

(ग) सारी दुनिया क्यों खिल उठी थी?

(घ) निशीथ पत्र के बदले क्या करने को कहता है?

3. निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(क) क्या देखकर पुरानी बात याद आ गई?

(i) सूर्य को (ii) पूनम के चाँद को (iii) मौसी को (iv) अंजना को

(ख) हमें छत पर ले जाती थी। कौन?

(i) माँ (ii) बहन (iii) बड़े भाई (iv) रानी मौसी

(ग) किसने चन्द्रमा पर सबसे पहले पाँव रखा था?

(i) नील आर्मस्ट्रांग (ii) सी.वी. रमन (iii) स्वामीनाथन (iv) नेलसन मैंडला

(घ) अमेरीका की किस संस्था ने चन्द्रमा में विस्फोट कराया?

(i) स्पेश संस्था (ii) नासा (iii) यू.एन.ओ. (iv) स्पेश कमीशन

(ङ) अंजना किसकी बहन है?

(i) रमेश (ii) गोपाल (iii) चंदामामा (iv) निशीथ

भाषाकार्य

1. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यो में प्रयोग कीजिए :**

सैर, तस्वीर, पूए, यात्रा, चाँद, देलीफोन, प्रसन्न, खोज

2. **'क' स्तंभ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तंभ के विशेष्यों (संज्ञाओं) का मिलान कीजिए :**

'क' स्तंभ	'ख' स्तंभ
भोले	बाद
भारतीय	दुनिया
सारी	चाँद
पुरानी	लोग
चमचमाता	बच्चे

3. **निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थानों मे कोष्ठक में से सही सर्वनाम चुनकर भरिए:**

(क) _____ इसलिए यह पत्र लिख रहा हूँ। (मैं, हम)

(ख) चंदामामा ने _____ को प्याली में दिया, (वह, हम)

(ग) _____ ने थाली में खाए। (तू, आप)

(घ) _____ प्रमाणित हुआ कि चन्द्रमा में जल है। (आप, यह)

(ङ) आशा है, _____ प्रसन्न होगी। (मैं, तुम)

4. उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए :

उदाहरण - नासा संस्था ने एक विस्फोट कराया।

नासा संस्था एक विस्फोट करेगी।

(क) मैंने टेलीफोन से कहा।

(ख) चन्द्रयान ने तस्वीरें खींचीं

(ग) उमा ने रोटी खाई।

(घ) लोगों ने चाँद पर जाने की तैयारी की।

(ङ) तुमने एक कहानी लिखी।

5. खाली जगहों पर सही परसर्ग कोष्ठक में से चुनकर भरिए :

(की, में, के, ने, पर)

(क) पूनम —— चाँद को देखकर एक पुरानी बाद याद आ गई।

(ख) उस समय चाँद —— जाना सपना था।

(ग) चन्द्रमा —— कई यात्राएँ हो चुकी हैं।

(घ) नासा —— चन्द्रमा पर विस्फोट कराया।

(ङ) आपने पूए थाली —— खाए।

याद रखें :

इस पाठ में जो सर्वनाम आए हैं, वे हैं -

हम, हमें, वह, यह, आप, तुम्हें, मैं, तुम - ये सब पुरुषवाचक सर्वनाम हैं। पुरुषवाचक

सर्वनाम के तीन भेद है-

(१) उत्तम पुरुष - मैं, हम

(२) मध्यम पुरुष - तू, तुम/आप

(३) अन्य पुरुष - वह, यह, वे, ये

परसर्ग के संयोग से सर्वनाम के मूल-रूप में परिवर्तन हो जाता है, जैसै -

मैं + को = मुझे, मुझको	मैं + ने = मैंने
मैं + रा = मेरा	वह + ने = उसने
हम + को = हमें, हमको	यह + ने = इसने
हम + रा = हमारा	वेह + ने = उन्होने
तू + को = तुझे, तुझको	वह + को = उसे, उसको
तुम + को = तुम्हें, तुमको	वह + को = उसे, उसको
वेह + को = उन्हें, उनको	आप + ने = आपने

जानिए

पत्र की पूरी रूपरेखा जानिए :

(क) जिसके पास पत्र लिख रहे हैं उसका संबोधन

(ख) पत्र का विषय

(ग) लिखने वाले का नाम

(घ) लिफाफे पर पूरा पता

आपके लिए काम :

इस प्रकार के पत्र लिखने का अभ्यास कीजिए ।

●

ताजमहल की आत्म-कहानी

गुलाब राय

अपने विधाता को मैं अपने अंक में लिए बैठा हूँ । जिसने मुझे खड़ा किया वही मेरी गोद में सो रहा है, जिसके लिए मैं खड़ा किया गया वह तो मेरी गोद में सो रही है । उनके इस अप्रतिम स्नेह को पाकर मैं गर्व से फूला नहीं समाता । शताब्दियाँ बीत गईं पर उनके स्नेह का वैभव आज भी मुझमें सुरक्षित है । इस वैभव को संसार जाने कब से विस्मय-विमुग्ध होकर देख रहा है । दुनिया के महान् आश्चर्यों में मेरी गणना की जाती है ।

सम्राट शाहजहाँ और सम्राज्ञी मुमताज की मैं प्रेम-समाधि हूँ । प्रेम की पवित्रता और तल्लीनता का मैं स्मारक हूँ । भेद-भावों में पड़े मनुष्यों को मैं यह संकेत कर रहा हूँ कि प्रेम ईश्वरीय सृष्टि की सबसे बड़ी विभूति है । दो बिछुड़े हुए हृदय मेरी गोद में जुड़े हुए हैं । अत्याचारियों ने समय-समय पर आक्रमण किया-मुझे भी लूटा गया । मेरे आभूषणों, रत्नों और जवाहरातों को लोग ले गये । मेरे शरीर को उन्होंने नग्न कर दिया । पर मेरे अन्दर जो वैभव छिपा पड़ा है-जो दो हृदय जुड़े पड़े हैं, उन्हें लूटने का साहस नृशंस से नृशंस अत्याचारी को भी नहीं हो सका । प्रेम की लौ के सामने उनकी आँखें खुली नहीं रह सकीं । मैं भौतिक ऐश्वर्य का स्मारक नहीं- प्रेम का स्मारक हूँ । मेरी नींव में उस वियोगी सम्राट् के दो बूँद आँसू चू पड़े थे । कहते हैं आकाश का हृदय भी उन आँसुओं की स्मृति में द्रवीभूत हो उठता है और दो बूँद आँसुओं से वह मेरे हृदय को सींचने का

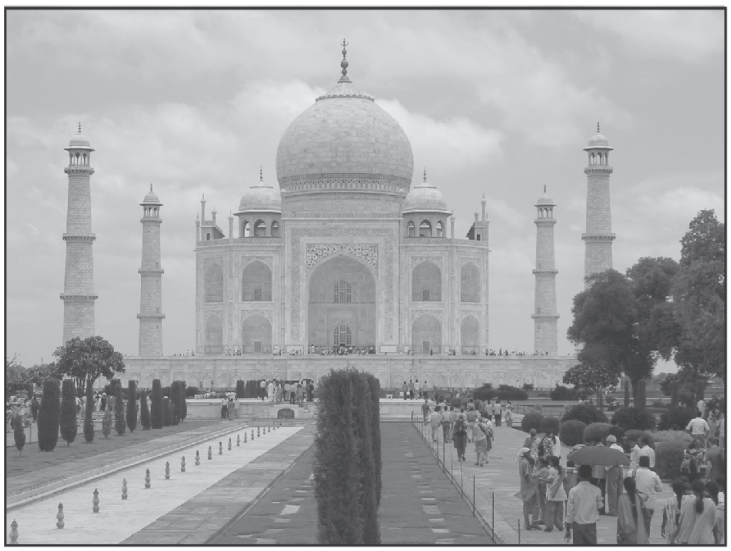

प्रतिवर्ष प्रयास करता है । पर मेरे हृदय तक उसके सभी आँसू पहुँच जाते हैं- कल्पना जगत् के विश्वासों पर मैं विश्वास नहीं करता। उसके आँसुओं से तो मेरा कलेवर भी निखर उठता है ।

यमुना के किनारे पर मैं खड़ा हूँ । आगरे के स्नेह को मैं भूल नहीं सकता । उसे छोड़कर मैं कहीं नहीं जा सकता । योगी की समाधि की तरह मैं आगरे में यमुना के किनारे अपनी स्मृतियों को संजोने का प्रयास करता हूँ । बावली यमुना भी मेरे अतीत वैभव के स्वर्णिम दिनों को याद कर दु:ख से सूख रही है । वह श्यामा हो गई है । मुझे उस पर स्वाभाविक रूप से स्नेह है । हम पुराने साथी हैं । वह हिलोरें लेकर मुझे प्यार करती है । अपनी सुनाती है, मेरी सुनती है ।

कहते हैं, मैं वास्तविकता का अद्वितीय उदाहरण हूँ । श्वेत संगमरमर से मेरा निर्माण हुआ । मेरे निर्माण में करोड़ों रुपये व्यय हुए । हजारों आदमियों का पेट भरा । एक युग में भी मेरा निर्माण कार्य समाप्त न हो सका ।

मृत्यु-शय्या पर अन्तिम साँसें गिनती हुई मुमताज की यही तो अन्तिम इच्छा थी । उस स्वर्गीय देवी की बात शाहजहाँ कैसे टाल सकता था ? इसीलिए तो उसकी इच्छानुसार उसकी यह बेजोड़ कब्र अस्तित्व में आई । कब्र ? पर यह कब्र अभागी नहीं । रात-दिन इसे देखने न जाने कितने लोग आते हैं । सुदूर विदेशों से यात्री आकर मुझे देखकर अपना आना सार्थक समझते हैं । मेरे पास आकर उन्हें श्रद्धा से झुक जाना पड़ता है । उनके मनोभावों को पढ़ने का मुझे भी अवसर मिलता है । अपने सम्बन्ध में उनकी धारणाओं को देख मैं मुस्करा उठता हूँ ।

मुगल साम्राज्य के ऐश्वर्य के दिन बीत गये । मानव-समाज की बर्बरता को देखकर आज मेरा पाषाण हृदय भी क्षुब्ध हो उठा है । भारत की असहाय अवस्था को देखकर आज मुझे दु:ख होता है । सिनेमा के पट पर मेरी छवि अंकित करने के लिये लोग यहाँ आते हैं,

मेरे चित्र उतारते हैं । चित्रकार अपनी तूलिका से मुझे अमर करना चाहता है । कवि अपनी रचना में मुझे चिरजीवी बनाने का प्रयत्न करता है । पर मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है । सम्राट् और सम्राज्ञी भी अपने भारत की इस दुरवस्था को देखकर म्लान हो रहे हैं । अगर यही अवस्था रही तो दु:ख के बोझ से मैं ढह जाऊँगा- आज नहीं, कल सही । मैं चाहता हूँ मुझसे प्रेम का पाठ लेकर भारतवासी एक सूत्र में बँध जायें और अपने देश का कल्याण करें ।

मुझे किसी से प्रतिद्वन्द्विता नहीं । अग़ाखाँ महल आज इस युग में मेरा एक सच्चा साथी हुआ है । कस्तूरबा उसकी गोद में है । मेरी गोद में प्रेम की देवी है । उसकी गोद में कर्त्तव्य की देवी है । मुझे विश्वास है, इस प्रेम और कर्त्तव्य के सन्देश को लेकर मानवता अपना कल्याण करेगी ।

(संपादित)

शब्दार्थ :

विधाता - ब्रह्मा, (यहाँ) बनाने वाला, अंक - गोद, अप्रतिम - बेजोड़, अनुपम, शताब्दी - सौ साल, वैभव - संपत्ति, सजधज-शोभा, विमुग्ध - मोहित, फूला न समाना - बहुत खुश होना, सम्राट - बादशाह, राजाधिराज, सम्राज्ञी - सम्राट की पत्नी, तल्लीन - निमग्न, स्मारक - यादगार, संकेत - चिह्न, विभूति - संपत्ति, आभूषण - गहना, नग्न - नंगा, नृशंस - क्रूर, लौ - आग की लपट, भौतिक - सांसारिक, द्रवीभूत - पिघला हुआ, प्रयास- चेष्टा, निखरना - खिल उठना, संजोना - संभाल कर रखना, बावली - पगली, स्वर्णिम - सुनहला, स्वाभाविक- प्राकृतिक, वास्तविकता - सच्चाई, यथार्थ, अद्वितीय - जिसके बराबर दूसरा नहीं, बेजोड़ - जिसकी जोड़ी का कोई नहीं, अस्तित्व - सत्ता, कब्र - मुर्दा गाड़ने का स्थान, बर्बरता - असभ्यता, क्षुब्ध- व्याकुल, दु:खी, म्लान - उदास, विदीर्ण - फटा हुआ, ढहना - गिरना, प्रतिद्वन्द्विता– होड़, संदेश - समाचार, विशेष बात ।

विचार विश्लेषण :

ताजमहल का निर्माण मुमताज बेगम की अंतिम इच्छा के कारण हुआ । उसमें मुमताज और बाद में उसको बनानेवाला शाहजहाँ दोनों दफनाये गये । उनके प्रेम का यह प्रतीक है । उस पर लुटेरों ने अत्याचार किया । मगर वह आज भी अक्षुण्ण है और दुनिया के लिए आश्चर्य बना हुआ है ।

अनुशीलनी

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) ताजमहल क्यों गर्व से फूला नहीं समाता ?

(ख) ताजमहल क्या संकेत कर रहा है ?

(ग) ताज भौतिक ऐश्वर्य का स्मारक नहीं अपितु प्रेम का स्मारक है, कैसे ?

(घ) यमुना के साथ ताजमहल का कैसा संबंध है ?

(ङ) वास्तविकता का अद्वितीय उदाहरण ताजमहल है, क्यों ?

(च) विदेशी ताजमहल को देख कर क्या करते हैं ?

(छ) लोग ताजमहल को देख कर कैसी कल्पना करते हैं ?

(ज) ताजमहल का हृदय क्यों विदीर्ण हो रहा है ?

2. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(क) ताजमहल की गोद में कौन-कौन सो रहे हैं ?

(ख) शताब्दियाँ बीत गईं पर ताजमहल में क्या चीज सुरक्षित है ?

(ग) ताज महान् आश्चर्य क्यों बन गया है ?

(घ) ताज किन का स्मारक है ?

(ङ) अत्याचारियों ने क्या किया ?

(च) ताज के अन्दर कौन-सा वैभव छिपा पड़ा है ?

(छ) आकाश ताजमहल को क्या करता है ?

(ज) यमुना क्यों सूख रही है ?

(झ) ताज क्यों मुस्करा उठता है ?

(ञ) ताजमहल को किसीसे कोई प्रतिद्वन्द्विता क्यों नहीं है ?

(ट) ताजमहल क्या चाहता है ?

3. सही विकल्प चुनकर लिखिए:

(क) कौन गर्व से फूला नहीं समाता?

(i) शाहजहाँ (ii) ताजमहल (iii) मुमजात (iv) देशवासी

(ख) ताजमहल क्या है?

(i) मंदिर (ii) मस्जिद (iii) प्रेम-समाधि (iv) श्रेष्ठमहल

(ग) मैं भौतिक ऐश्वर्य का स्मारक नहीं, प्रेम का स्मारक हूँ, कौन कहता है?

(i) शाहाजहाँ (ii) अकबर (iii) मुमताज (iv) ताजमहल

(घ) ताजमहल के निर्माण में कितने रुपए व्यय हुए?

(i) एक लाख (ii) करोड़ों (iii) पाँच हजार (iv) दस लाख

(ङ) कौन अपनी तुलिका से ताजमहल को अमर करना चाहता है?

(i) लेखक (ii) कवि (iii) नाककार (iv) चित्रकार

4. एक-एक शब्द में उत्तर दीजिए:

(क) 'ताजमहल की आत्म कहानी' के लेखक कौन हैं?

(ख) दुनिया के महान आश्चर्यों में किसकी गणना की जाती है?

(ग) ताजमहल किसकी प्रेम-समाधि है?

(घ) ताजमहल कहाँ खड़ा है?

(ङ) कौन एक सूत्र में बँधकर अपने देश का कल्याण करें?

भाषाकार्य

1. **कर्त्ता और क्रिया <u>लिंग और वचन</u> दोनों से प्रभावित होते हैं । इन उदाहरणों को देखिए ।**

सम्राट सो रहा है । शताब्दियाँ बीत गईं ।

सम्राज्ञी सो रही है । ऐश्वर्य के दिन बीत गए ।

सही कर्ता या क्रिया पदों द्वारा रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए :

मैं अंक में लिए _____ ।	मैं फूला नहीं _____ ।
जिसने मुझे _____ ।	_____ संकेत कर रहा हूँ ।
_____ देख रहा है ।	_____ छिपा पड़ा है ।
दुनिया देख _____।	_____ मुझे प्यार करती है ।
दो हृदय जुड़े _____ ।	_____ मुझे प्यार करती हैं ।
आँसू _____ ।	वह अपनी _____ है ।
सभी आँसू _____ ।	मेरी _____ है ।
_____ चाहता हूँ ।	सम्राट और सम्राज्ञी म्लान _____ ।

2. इन पदबंधों को देखिए :

शब्द वाक्यों में प्रयुक्त हो तो पद कहलाते हैं ।
पदों के समूह को पदबंध कहते है ।

(क) अपना अंक - अपने अंक में

मेरी गोद - मेरी गोद में

मेरे आभूषण - मेरे आभूषणों को

मेरा निर्माण - मेरे निर्माण में

आप कुछ ऐसे पदबंध बनाइए ।

(ख) स्नेह का वैभव — मुमताज की प्रेम-समाधि
तल्लीनता का स्मारक — आदमियों का पेट
सम्राट के आँसू — यमुना की लहरें

मेरी माता -	मेरे पिताजी -	मेरा घर
उनकी कैंची -	तुम्हारी साईकिल -	तुम्हारा बाग
मेरे बच्चे -	गाय के बछड़े -	एक थैले के चट्टे - बट्टे

आप कुछ ऐसे पदबंध लिखिए । उनमें संबंध कारक के परसर्ग के प्रयोगों को ध्यान से देखिए ।

(ग) **सही विभक्ति लगाकर रिक्त स्थानों को भरिए :**

(i) शाहजहाँ _____ मुझे खड़ा किया ।

(ii) कस्तूरबा _____ सभी माताजी कहते थे ।

(iii) उनके अप्रतिम स्नेह _____ पाकर मैं फूला नहीं समाता ।

(iv) इस असहाय अवस्था _____ मेरा हृदय क्षुब्ध है ।

(v) श्वेत संगमरमर _____ मेरा निर्माण हुआ है ।

(vi) मैं गर्व _____ फूला नहीं समाता ।

(vii)धोबी _____ कपड़े दे दो ।

(viii)यात्री की आँखों _____ आँसू टपक पड़े ।

(ix) जाने कब _____ देख रहा है ।

(x) हजारों _____ पेट भरा ।

(xi) यमुना _____ किनारे खड़ा हूँ ।

(xii)मेरी नींव _____ वियोगी सम्राट के दो बूँद आँसू गिर पड़े थे ।

(xiii)मुझे उस _____ स्वाभाविक स्नेह है ।

3. 'क' विभाग के शब्दों के पर्यायवाची शब्द 'ख' विभाग में दिए गए हैं। उनका मिलान कीजिए:

(क) विधाता, अंक, वैभव, संदेश, प्रयास, भौतिक, अस्तित्व

(ख) समाचार, गौद, चेष्टा, सांसारिक, ब्रह्मा, संपत्ति, सत्ता

4. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए:

विधाता, सम्राट, बावला, बादशाह, योगी

5. उदाहरणों के अनुसार शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए:

शताब्दी-शताब्दियाँ आँख-आँखें

स्मृति-	बूँद-
नदी-	भूल-
माली-	चाह-
गाड़ी-	साँस-
रानी-	

'काला घोड़ा'। इसमें 'काला' घोड़े का रंग या एक विशेषता बताता है। इसे विशेषण कहते हैं। इस पाठ में आए निम्नलिखित शब्द-युग्मों पर ध्यान दीजिए:

अपनी वीरता, राजपुती शान, जख्मी राणा, अनगिनत सैनिक, उसकी फौज, हमारी लड़ाई, कई चोटें, बड़ी फुर्ति, विशाल सेना, चुटकी भर धूल।

इनमें से प्रथम शब्द विशेषण हैं। ये दूसरे शब्दों की विशेषताएँ बताते हैं। ये हैं: अपनी, राजपुती, जख्मी, अनगिनत, उसकी, हमारी, कई, बड़ी, विशाल, चुटकी भर।

6. निम्नलिखित संज्ञाओं के विशेषण-रूप लिखिए:

सुरक्षा, ईश्वर, तल्लीनता, क्षुब्धता, प्रतिष्ठा, प्रेम, भारत, बर्बरता, विदेश, वास्तविकता, स्वर्ण, योग

7. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषणों को छाँटिए:

(क) हृदय स्मृति में द्रवीभूत हो उठता है।

(ख) प्रेम ईश्वरीय सृष्टि की विभूति है।

(ग) दो बूँद आँसू चू पड़े थे।

(घ) अप्रतिम स्नेह पाकर मैं गर्व से फूला नहीं समाता।

(ङ) मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है।

जानिए :

निम्म लिखित वाक्यों को पढ़िए:

उन्होंने मेरे शरीर को नग्न कर दिया।

मुमताज की यही अंतिम इच्छा थी।

लोग मेरे चित्र उतारते है।

हम पुराने साथी हैं।

दुख के बोझ से मैं ढह जाऊँगा।

मानवता अपना कल्याण करेगी

ऊपर के वाक्यों में कुछ वाक्य बीते हुए समय की घटनाओं का संकेत देते है, कुछ वाक्य वर्तमान की घटनाओं का संकेत देते हैं और कुछ वाक्य आगामी दिनों में घटित होने वाली घटनाओं का संकेत देते है। इस आधार पर वाक्यों को हम तीन कालों में बाँटते हैं। वे हैं-(१) भूत काल, (२) वर्तमानकाल, (३) भविष्यत काल

यहाँ पहला और दूसरा वाक्य भूतकाल में, तीसरा और चौथा वाक्य वर्तमान काल में, पाँचवाँ और छठा वाक्य भविष्यत् काल में हैं।

इस पाठ से प्रत्येक काल के दो-दो वाक्य चुनकर लिखिए।

आपके लिए काम :

मोगल सम्राट शाहजहाँ और ताजमहल के चित्र संग्रह कीजिए और उनके बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

●

अनुवाद

एक भाषा की वात को दूसरी भाषा में कहना ही अनुवाद है। ओड़िआभाषी विद्यार्थी ओड़िआ से हिन्दी में और हिन्दी से ओड़िआ में अनुवाद करते हैं। हिन्दी वाक्यों में लिंग और वचन दोनों का प्रभाव रहता है। विद्यार्थी इस पर ध्यान दें।

ପିଲାଟିଏ ଯାଉଛି - बच्चा जा रहा है।

ପିଲାମାନେ ଯାଉଛନ୍ତି - बच्चे जा रहे हैं।

ଝିଅଟିଏ ଯାଉଛି - लड़की जा रही है।

ଝିଅମାନେ ଯାଉଛନ୍ତି - लड़कियाँ जा रही हैं।

आ कारांत विशेषण पर भी लिंग-वचन का प्रभाव पड़ता है।

ଭଲ ପିଲା - अच्छा लड़का

ଭଲ ପିଲାମାନେ - अच्छे लड़के

ଭଲ ମିଠେଇ - अच्छी मिठाई

ଭଲ ମିଠେଇଗୁଡ଼ିକ - अच्छी मिठाइयाँ

यहाँ कुछ वाक्य संरचनाएँ दी गई हैं। उनके आधार पर विद्यार्थी दूसरे वाक्यों का अनुवाद करें।

संरचना-१

मैं हूँ	।	हम हैं	।
तू है	।	तुम हो	।
वह है	।	वे हैं।	।

अनुवाद कीजिए :

ମୁଁ ଶିକ୍ଷକ। ସେମାନେ ଛାତ୍ର। ତୁମେ ଗାୟକ। ଆମେ ଭାରତୀୟ। ତୁ ଚତୁର।

संरचना-२

पुल्लिंग	।	स्त्रीलिंग	
मैं खाऊँगा	।	मैं खाऊँगी	। ମୁଁ ଖାଇବି।
हम खाएँगे	।	हम खाएँगी	। ଆମେ ଖାଇବୁ।
तू खाएगा	।	तू खाएगी	। ତୁ ଖାଇବୁ

तुम खाओगे ।	तुम खाओगी ।	ତୁମେ ଖାଇବ ।
आप खाएँगे ।	आप खाएँगी ।	ଆପଣ ଖାଇବେ ।
वह खाएगा ।	वह खाएगी ।	ସେ ଖାଇବ ।
वे खाएँगे ।	वे खाएँगी ।	ସେମାନେ ଖାଇବେ ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

ମୁଁ (ମୀତା) ପଢ଼ିବି। ସେମାନେ (ପୁଅମାନେ) ଖେଳିବେ। ତୁମେ (କମଳା) କହିବ। ଆପଣ (ଶ୍ରୀ ରାଓ) ଆସିବେ। ସେ (ଲୀଲା) ଲେଖିବ।

संरचना-३

मैं गया ।	मैं गई ।	ମୁଁ ଗଲି।
हम गए ।	हम गईं ।	ଆମେ ଗଲୁ।
तु गए ।	तू गई ।	ତୁ ଗଲୁ।
तुम गए ।	तुम गई ।	ତୁମେ ଗଲ।
आप गए ।	आप गईं ।	ଆପଣ ଗଲେ।
वह गया ।	वह गई ।	ସେ ଗଲା।
वे गए ।	वे गईं ।	ସେମାନେ ଗଲେ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

ମୁଁ ଘରକୁ ଗଲି। ଶୀଲା ବଜାରରୁ ଫେରିଲା। ପିଲାମାନେ ପଡ଼ିଆରେ ଦୌଡ଼ିଲେ। ଶିକ୍ଷକ ଶ୍ରେଣୀକୁ ଆସିଲେ। ମୁଁ ହାଟକୁ ଆସିଲି।

सारचना-४

मैंने खाया ।	ମୁଁ ଖାଇଲି।
हमने खाया ।	ଆମେ ଖାଇଲୁ।
तूने खाया ।	ତୁ ଖାଇଲୁ।
तुमने खाया ।	ତୁମେ ଖାଇଲ।
उसने खाया ।	ସେ ଖାଇଲା।

उन्होंने खाया । ସେମାନେ ଖାଇଲେ

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

ମୁଁ ଦେଖିଲି। ସେମାନେ ପଢ଼ିଲେ। ମୋହନ କହିଲା। ମାଳତୀ ଶୁଣିଲା। ଆପଣ କହିଲେ। ଚନ୍ଦନ ଦେଖିଲା। ଚାନ୍ଦିନୀ ଲେଖିଲା।

संरचना-५

मैंने केला खरीदा - ମୁଁ କଦଳୀ କିଣିଲି

पिताजी ने भात खाया - ବାପା ଭାତ ଖାଇଲେ

तुमने काम किया - ତୁମେ କାମ କଲ

उसने नाटक देखा - ସେ ନାଟକ ଦେଖିଲା

उन्होंने काम किया - ସେମାନେ କାମ କଲେ

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

ସେମାନେ କ୍ରିକେଟ ଖେଳିଲେ। ଦୋକାନୀ ଚାଉଳ ବିକିଲା। ଶିକ୍ଷକ ପାଠ ପଢ଼ାଇଲେ। ମୁଁ ମୋହନକୁ ଡାକିଲି। ବାପା ଖବରକାଗଜ ପଢ଼ିଲେ।

संरचना-६

मैंने रोटी खाई । ମୁଁ ରୁଟି ଖାଇଲି।

लोकनाथ ने मछली पकड़ी । ଲୋକନାଥ ମାଛ ଧରିଲା।

नानी ने एक कहानी सुनाई । ଆଈ ଗପଟିଏ ଶୁଣାଇଲେ।

उन्होंने इडली खाई । ସେମାନେ ଇଡ଼ଲି ଖାଇଲେ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

ସେ ସିନେମା ଦେଖିଲେ। କମଳା ରୁଟି ଖାଇଲା। ସୁନୀଲ ପେନସିଲ କାଟିଲା। ମୁଁ ବହି ଦେଖିଲି। ଶୀଲା କବିତା ଶୁଣିଲା। ତୁ ଝରକା ଖୋଲିଲୁ।

●

आइए, हम कविता बनाएँ

1. कल करे सो आज कर
आज करे सो अब ।
पल में परलय होता है
तब फिर करेगा कब ?

L8GX8H

2. वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो
सामने पहाड़ हो
सिंह का दहाड़ हो
रुको नहीं डरो नहीं ।

3. बड़े देखकर छोटे का
कभी न करो अपमान
जहाँ काम आये सुई
क्या कर लेगा कमान ।

4. गरजें बादल
बरसें बादल
कड़के बिजली
नदियाँ उछली
भर गई क्यारी
लगती प्यारी
धान की बाली
लाए खुशहाली ।

5. छुक छुक गाड़ी
तेजी से दौड़ी
लचकती पटरी
उचकती गठरी ।

6. दूसरों के दु:ख में आँसू बहाओ
दूसरों के सुख में हँसी मिलाओ
तब तुम बनोगे सच्चा इंसान
पाओगे जी भरके सम्मान ।

पहेलियाँ : बूझें बुझाएँ

संकलित

धनुष मैं कहलाऊँ
पर तीर न चलाऊँ
पहने सतरंगी कपड़े
दूर गगन में इठलाऊँ
कहो तो मैं कौन हूँ ?

जल की मैं हूँ रानी,
तैरूँ गहरे पानी ।
पकड़ में कभी न आऊँ
जो मिले सो खा जाऊँ
कहो मैं कौन हूँ ?

एक थाल मोती से भरा,
सबके ऊपर औंधा धरा ।
झर झर झरे जल की धारा,
पर एक मोती न नीचे गिरा ।

नीचे पटको ऊपर जाती,
ऊपर फेंको नीचे आती ।
उछल - कूद है सदा मचाती,
हमको कितने खेल खिलाती ।

दोनों बहनें रहतीं साथ,
आपस में न करतीं बात ।
एक दूसरे को तब देखें,
जब हो आईने के साथ ।
कहो ये कौन हैं ?

बड़े बड़े पेड़ लहकती डालियाँ,
भरपूर हरियाली छोटी छोटी पत्तियाँ ।
रसीले फल झूमे जैसे छीमियाँ
बिके तो मिले पैसे भर भर थैलियाँ ।
कहो ये क्या हैं ?

इन्द्रधनुष, मछली, आसमान, गेंद, प्रतिबिंब, इमली